 ISSN 2581-9917

माधवी : धर्म आधारित मिथ्या जड़ताओं और आस्थाओं की नई आलोक में प्रस्तुति

डॉ. अमिता*

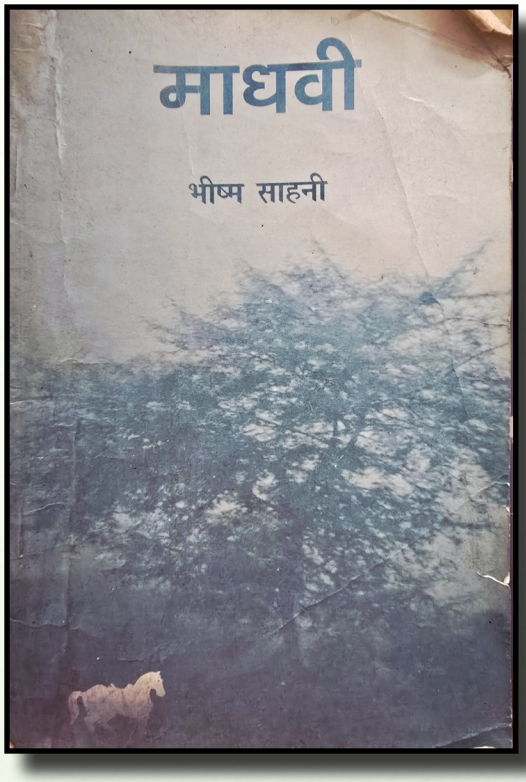

माधवी' नाटक भीष्म साहनी ने पौराणिक कथा में अपनी कल्पना के नूतन प्रयोग करके एक ऐसी सृजना की है जो आज भी बहुत प्रासंगिक एवं उपादेय है। भीष्म साहनी समाजवादी चिंतक हैं और इसलिए उनकी दृष्टि तर्कयुक्त एवं वैज्ञानिक है। माधवी की कथा महाभारत के एक अध्याय में आती है। ऐसा ज्ञात हुआ है कि रेल यात्रा के दौरान त्रिलोचन शास्त्री ने भीष्म साहनी को यह कहानी सुनाई थी तभी से भीष्म साहनी ने माधवी को लेकर नाटक की सृजना की योजना बना ली जो 'माधवी' नाटक के रूप में हमारे सामने है।

माधवी नाटक वास्तव में पूर्व समाज की बेड़ियों में जकड़ी हुई शोषित नारी की करुण कथा है। पूरे नाटक के केंद्र में एक नारी है- माधवी। वह ययाति की पुत्री है। माधवी के चारों ओर जो पुरुष पात्र हैं वे माधवी के माध्यम से अपने-अपने अलग-अलग स्वार्थ पाले हुए हैं। ययाति दानवीरता के लिए और यशस्वी होने के लिए माधवी को गालव को सौंप देता है। गालव ऋषि विश्वामित्र का शिष्य है उसे गुरुदक्षिणा चुकानी है। ययाति, पिता अपनी बेटी माधवी को उसे सौंप देते हैं और गालव भी अपने स्वार्थ के लिए माधवी को साधन बनाए रखता है। विश्वामित्र यह जानते हुए भी कि गालव को गुरु दक्षिणा से मुक्त नहीं करते कि गालव एक निरपराध कन्या के स्वत्व की बलि लेकरअपने स्वार्थ को पूरा कर रहा है। इसके साथ तीनों राजा हर्यश्च, दिवोदास और वृद्ध उशीनर उससे पुत्र लाभ लेकर त्याग देते हैं उन्हें कोई चिंता नहीं कि माधवी अब कैसे जिएगी? अर्थात माधवी की पीड़ा से कोई भी दुखी नहीं है। वे माधवी के माध्यम से पुत्र प्राप्ति के बाद माँ बेटे के वत्सल भाव से बिल्कुल व्यथित नहीं हैं। कैसे एक माँ अपने नवजात को छोड़कर बिछोह की अग्नि में तड़पती है, यह चिंता किसी को नहीं है। पौराणिक कथाओं में अनेक सन्दर्भ ऐसे हैं जिन्हें भीष्म साहनी ने कल्पना के आधार पर नए तार्किक ढंग से अभिव्यक्त किया है जैसे ''जो वचन दे दिया उसे पूरा किया। मुँह से जो बात कह दी, वह पत्थर पर लकीर बन गई।'' प्रारम्भ में ही पहले दृश्य में कथावाचक के मुँह से यह बात कही गई। नाटककार इस बात को नए आलोक और वैज्ञानिक आधारों के साथ

* सहायक प्रोफेसर
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।।

आगे बढ़ाता है। अकस्मात बिना सोचे समझे जो मुँह से निकल गया तो क्या उसका निर्वहण जरूरी है? और उसे पूरा करने में मनुष्य की जो दुर्गति होगी उसके बारे में क्या चिंतन की आवश्यकता नहीं?

नाटक की कथा भी कुछ इस प्रकार आगे बढ़ती है। गालव शिष्य ने गुरु विश्वामित्र के यहाँ शिक्षा पूर्ण कर ली और शिष्य ने गुरु दक्षिणा के लिए हट की। गुरु विश्वामित्र ने गालव को कहा कि वह अश्वमेघ के 800 घोड़ें गुरुदक्षिणा के रूप में भेंट करे। गुरु द्वारा ऐसी दक्षिणा की माँग बड़ी अतार्किक है क्योंकि स्वयं विश्वामित्र को भी ज्ञान है कि आठ सौ घोड़े तो पूरे आर्यावर्त में नहीं हैं, तो शिष्य गालव कहाँ से ला पाएगा? लेकिन गुरु ने ऐसा कहा है तो वचन पालन करना ही पड़ेगा और गालव अपने को वचनबद्ध मानता है। गुरु विश्वामित्र के कहने पर शिष्य गालव न तो विरोध करता है और न ही वह अस्वीकृति देता है क्योंकि वह श्रेष्ठ गुरु का श्रेष्ठ शिष्य है। इसलिए गुरुदक्षिणा देनी पड़ेगी ही। यहाँ भीष्म साहनी संकेत करते हैं कि गुरु अपने शिष्यों से ऐसी गुरु दक्षिणा की अपेक्षा क्यों करते हैं? और शिष्य जो 12 विधाओं के ज्ञान में पारंगत होकर भी यह क्यों नहीं कह पाते हैं कि गुरु जी ऐसी गुरुदक्षिणा समर्पित नहीं हो पाएगी। नाटककार कहना चाहता है कि वचन का पालन बुरा नहीं किन्तु वह वचन भी विवेक द्वारा पुष्ट हो। और शिष्य भी कर्त्तव्य परायणता के दोष से ग्रस्त नहीं होने के लिए विकल है लेकिन उसके सिर पर रख दिए गए बोझ के लिए विरोध भी वह शिष्य नहीं कर पाता क्योंकि गुरु को वचन दिया है गुरुदक्षिणा देने का। और कर्त्तव्य पूरा न होता देख गालव आत्महत्या की ओर बढ़ जाता है तभी देवलोक से गरुड़देव दर्शन देते हैं और कहते हैं ''मुनिकुमार इधर निकट ही महाराज ययाति का आश्रम है, वह बड़े दानवीर है... उनके द्वार से कभी कोई अभ्यार्थी खाली हाथ नहीं लौटा।''

गालव ययाति के आश्रम पर जाता है और उन्हें गुरु दक्षिणा के संबंध में बताता है और ययाति को यह भी बताता है कि गुरुड़ देव ने मुझे आपके पास इस निमित्त भेजा है।

ययाति राजपाठ त्यागकर आश्रम में वन में रहने लगे थे। वे समस्त राजसुख और ऐश्वर्य त्यागकर वनवासी हो जाते हैं किन्तु उनके भीतर से प्रशंसा पाने की चाह और यश लिप्सा नहीं गई। आश्रमवासी दो ययाति को कहता है ''यहाँ प्रशंसा करने वाले दरबारी नहीं हैं जो सारा वक्त राजा के आसपास घूमते रहते रहे, इससे राजा के अहं की तुष्टि होती रहती है। प्रशंसा से राजा को अपार सुख मिलता है।'' ययाति गालव को आठ सौ अश्वमेधी घोड़ें नहीं दे सकें लेकिन अपनी बेटी माधवी को उसे सौंप देते हैं कि वह बड़ी गुणवती है, उसे पाकर कोई भी राजा तुम्हें अश्वमेधी घोड़े दे देगा ''सुनो गालव, मैं तुम्हें आठ सौ अश्वमेधी घोड़े तो नहीं दे सकता पर मैं अपनी एकमात्र कन्या तुम्हें सौंप सकता हूँ। वह बड़ी गुणवती है। उसे पाकर कोई भी राजा तुम्हें आठ सौं अश्वमेधी घोड़े दे देगा।''नाटक में माधवी कहती है ''आज माँ होती तो क्या वह भी मुझे इस तरह दान में दे देती।'' 5 (पृ.सं.19) और माधवी किंचित मात्र भी विरोध न करके गालव के साथ चल देती है। भीष्म साहनी यहाँ नारी विमर्श के नए आयामों की ओर संकेत करते हैं कि बेटी न हुई कोई भेड़-बकरी हुई, उसकी कुछ इच्छा नहीं और वह अज्ञात के साथ उसके सपनों को पूरा करने के लिए भेज दी। और माधवी यह कैसी कर्त्तव्य परायणता का पालन कर रही है? और आखिरकार क्यों? क्या उसकी अपनी कोई निजता नहीं है? वह केवल एक साधन मात्र है दूसरों के सपनों को पूरा करने के लिए? उसके द्वारा अपना जीवन होम कर देने से उसके पिता ययाति तीनों लोकों में दानवीर कहलाये जाएंगे।

भीष्म साहनी ज्योतिष संबंधी धारणाओं पर भी कुठाराघात करते हैं। नाटक में ययाति गालव से कहता है ''राज ज्योतिषियों ने माधवी के लक्षणों की जाँच की है। इसके गर्भ से उत्पन्न होने वाला बालक चक्रवर्ती राजा बनेगा।'' लेकिन माधवी के जीवन में ऐसा नहीं हो पाता, अनेक कष्टों को भोगती हुई वह अनेक यंत्रणाओं के चुंगल में फंसती जाती है, जब माधवी अपने पिता ययाति से

पूछती है ''यह क्या है, पिताजी क्या आप नहीं चाहते कि मैं आपके पास रहूँ''?

तो ययाति कहतें हैं ''बेटी यज्ञ में दी जाने वाली आहुति साधारण आहुति नहीं होती।''

इस तरह के धार्मिक विश्वासों पर भीष्म साहनी व्यंग्य करते हैं।

आश्रमवासी दो- जब ययाति से कहता है कि आपका अपनी बेटी के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य है, तो ययाति कहता है- ''माधवी मेरी पुत्री है, पिता के प्रति अपना कर्त्तव्य निभायेगी। मैंने अपना कर्त्तव्य निभाया है।''

इस पर आश्रमवासी दो कहता है ''कर्त्तव्य नहीं महाराज आपने यश की लालसा से ऐसा किया है ताकि लोग कहें कि वनों में भी रहते हुए भी ययाति दानवीर हैं, अपनी एक मात्र कन्या को भी दान दे सकता है।''

माधवी भी अपने लिए कुछ भी सोचने में असमर्थ है। गालव एक स्थान पर माधवी से कहता है ''तू क्या चाहती हो माधवी?'' तो वह उत्तर देती है ''मैं क्या चाहूंगी? मेरे चाहने से क्या होता है, गालव? मैं तो तुम्हारी गुरुदक्षिणा का निमित्त मात्र हूँ।''

''यह तुम क्या कह रही हो माधवी? तुम दानवीर ययाति की कन्या हो। जिस बालक को तुम जन्म दोगी, वह चक्रवर्ती राजा बनेगा। तुम्हे देवताओं का वरदान प्राप्त है। फिर भी तो निमित्त ही बनूँगी, गालव। आज तुम्हारे लिए कल किसी राजा के लिए।'' नाटककार की अभिव्यक्ति कौशल प्रभावशाली है। माधवी का यह कथन पितृसत्तात्मक समाज पर करारी चोट है। ऐसी नारी की दशा बड़ी दयनीय है वह गालव से आगे कहती है ''क्या मैं नाचूँ? गाऊँ? अपने भाग्य पर इठलाऊँ? पिताजी ने आदेश दिया तो तुम्हारे साथ चली आई, तुम आदेश दो तो किसी राजा के रनिवास में चली जाऊँगी।'' पुरुष प्रधान समाज में वह पुरुष के हाथों की कठपुतली मात्र है। अयोध्या का राजा हर्यश्च माधवी और गालव को दो सौ अश्वमेधी घोड़े देने का वचन देता है और वह भी पुत्र लाभ होने पर। लेकिन गालव को आठ सौ अश्वमेधी घोड़े जुटाने हैं। इसके लिए माधवी को राजा हर्यश्च और अपने पुत्र को छोड़कर किसी दूसरे राजा के पास भी जाना पड़ेगा।

नाटक में एक स्थान पर मारीच, ययाति से इस सन्दर्भ में कहता है ''यदि आप विश्वामित्र से अनुरोध करें कि वह शेष घोड़ों का आग्रह छोड़ दें तो माधवी को कहीं और नहीं जाना पड़ेगा। विश्वामित्र आपकी बात मान लेंगें।'' तो इस पर ययाति कहते हैं ''क्या आप चाहते हैं कि मैं विश्वामित्र से कहूँ कि अपनी दक्षिणा की हट छोड़ दें ताकि ययाति की बेटी पटरानी बन सके? क्या अयोध्या नरेश चाहते हैं कि देशभर में मेरे नाम पर कीच पोता जाए?''

ययाति की हट धर्मिता स्पष्ट है, वह विवेक शून्य हो जाता है। उसे अपनी यश लिप्सा में माधवी का दुःख नहीं दिखता। अयोध्या के राजा हर्यश्च के यहाँ माधवी को पुत्र हो जाता है और स्वाभाविक ही माधवी में पुत्र मोह पैदा हो जाता है किन्तु उसकी मजबूरी है उसे मोह को त्यागकर जाना पड़ेगा। गालव माधवी को कहता है कि अब हम स्वतंत्र हैं ''अब हमें अयोध्या में रुकने की जरूरत नहीं है'', तो माधवी कहती है ''कौन स्वतंत्र, गालव? मुझे तो लगता है जैसे मेरे पैरों में जंजीरें पड़ गई हैं... तुमने सुना गालव?... बच्चा रोया है। वसुमना की आवाज़ थी वह जाग गया है... धाय की गोद में।''

नारी की दयनीय स्थिति को भीष्म साहनी ने प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। माधवी नाटक में गालव माधवी को कहता है ''मैं तुम्हें सुखी देखना चाहता हूँ। माधवी - मुझे सुखी देखना चाहते हो? (मुस्कुराती है) मेरे पिताजी मुझे सुखी देखना चाहते थे। अयोध्या नरेश भी मुझे सुखी देखना चाहते हैं, हँसकर चारों ओर से मुझे सुख ही सुख मिल रहा है, सुख की वर्षा हो रही है।''

भीष्म साहनी की भाषा बेजोड़ है, एक-एक शब्द नारी की अंतर्वेदना की सशक्त अभिव्यक्ति है। राजाओं के द्वारा नारी शोषण के नाटककार ने आकर्षक चित्र खींचें हैं। राजा दिवोदास पुत्र के लिए लालायित थे। उनके रनिवास में पैंतीस रानियाँ थीं, पर पुत्र लाभ एक से भी नहीं हुआ था। माधवी को देखकर आकर्षित हो गए।

माधवी नाटक में दिवोदास माधवी से पूछता है ''काम क्रीड़ा तो जानती हो या केवल यज्ञ हवन ही करना जानती हो? माधवी चुप रहती है। विदूषक से''

जाने क्यों स्त्रियाँ हमारी ओर खिंची चली आती हैं।

विदूषक- आपके शौर्य के कारण महाराज।

दिवोदास- जब कभी हम रथ पर निकलते हैं तो नगर की अट्टालिकाएँ स्त्रियों से खचाखच भर जाती है।''

राजा दिवोदास को गालव बताता है कि माधवी से उन्हें पुत्र लाभ अवश्य होगा। राजा दिवोदास के पहले ही सत्रह पुत्रियाँ थीं। वह कहता है- ''हम इस युवती को अपने रनिवास में रखेंगे। पुत्र लाभ होने पर हम तुम्हें अश्वमेधी घोड़े दे देंगें। दो सौ घोड़े। न एक कम न एक ज्यादा। पर यदि पुत्र न हुआ और अठारहवीं बेटी हो गई तो हम तुम दोनों को काल कोठरी में बंद कर देंगे।''

राजाओं की स्वार्थ नीति और शोषण वृत्ति को भीष्म साहनी ने उभारा है।

ऋषियों का दम्भी रूप भी भीष्म साहनी ने उभारा है। शिष्य भी हठ नहीं छोड़ पाते।

गालव का दम्भ तोड़ने के लिए विश्वामित्र ने उससे आठ सौ अश्वमेधी घोड़ों की गुरु दक्षिणा माँगी थी।

विश्वामित्र को भली- भाँति ज्ञात है कि पूरे आर्यवर्त में और घोड़े नहीं हैं।

नाटक में तापस विश्वामित्र को कहता है ''महाराज स्थिति बदल जाने पर आप गालव को कहला सकते थे कि अब और घोड़े भेजने की चेष्टा नहीं करे। दो सौ घोड़े मिल जाने पर भी आप उसको ऋण मुक्त कर सकते थे।''

इस पर विश्वामित्र कहते हैं ''तुम गालव को नहीं जानते, वह बड़ा स्वाभिमानी युवक है। वह इसे अपना अपमान समझता।''

अपने दम्भी चरित्र को ऋषि छिपाकर उस गालव को दोषी मानते हैं। ब्राह्मणों के अश्वमेधी घोड़े भी विश्वामित्र के आश्रम पर पहुंच चुके थे, यह तापस जानता था इसीलिए वह विश्वामित्र को कहता है ''आप चाहते हो कि आपके पास देश के अधिकांश अश्वमेधी घोड़े पहुँच जाएँ कि सभी घोड़े आपके एकाधिकार में आ जाएँ?'' ऋषि विश्वामित्र का अहंकार भी स्पष्ट हो गया है।

तापस विश्वमित्र को कहता है ''आपको उस पर दया करनी चाहिए। आप यह भी जानते हैं कि जिस माध्यम से वह घोड़े जुटा रहा है वह एक युवती है। विश्वामित्र- जानता हूँ। ययाति की कन्या।''

विश्वामित्र यह सब जानते हुए भी कठोर बने रहते हैं अर्थात अन्याय पर अन्याय, शोषण पर शोषण की एक लम्बी शृंखला बनती जाती है। गालव दो सौ अश्वमेधी घोड़ों के लिए भोजनगर वृद्ध राजा उशीनर के द्वार पर पहुँचता है व माधवी साधन बनी थी और उसे बूढ़े राजा के यहाँ भी रहना पड़ा और उससे पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम शिवि था। लेकिन बेबसी ऐसी यहाँ भी माँ माधवी को अपने बेटे से जुदा होना पड़ा ''माधवी हड़बड़ाकर उठ बैठी। उसने मुड़कर देखा तो उसका बालक सेज पर नहीं था। सोते-सोते में ही राज्याधिकारी उसे उठा ले गए थे।'' माधवी, एक माँ, कैसे पुत्र वियोग की अग्नि में तपती जाती है।

नाटक अत्यंत मर्म स्पर्शी मोड पर आ जाता है जब माधवी विश्वामित्र के पास जाकर गालव की छह घोड़े की गुरु दक्षिणा स्वीकार करने की प्रार्थना करती है- माधवी ''यह छह घोड़े ग्रहण करें महाराज और शेष दो घोड़े के लिए... माधवी : शेष दो घोड़े के लिए मुझे अपने पास रख लें।''

और विश्वामित्र माधवी को अपने आश्रम में प्रवेश की इजाजत दे देते हैं और विश्वामित्र का कामुक और दम्भी चरित्र भी सामने आकर स्पष्ट हो जाता है। गालव माधवी से मन ही मन प्रेम करने लगता है।

जब ययाति माधवी का स्वयंवर रचाते हैं तो गालव वहाँ पहुँचता है और मन ही मन सोचता है ''मुझे यहाँ पहले आ जाना चाहिए था। दो दिन पहले ही पहुँच जाता। माधवी का मन बदल भी तो सकता है। वह किसी राजा को वरेगी, सुख चैन से रहना चाहेगी मुझे क्यों वरेगी''? लेकिन वन से लौटी कमजोर, थकी हुई आकर्षणहीन, लावण्य हीन माधवी को देखकर ठिठक जाता है।

वह कहती है ''मुझे देखकर ठिठक क्यों गए? अब मैं पहले जैसी माधवी तो नहीं हो सकती हूँ ना गालव!... मैं बहुत मुटिया गई हूँ क्या?''.... तुम चिंता नहीं करो गालव! मैं फिर से पहले जैसी हो जाऊँगी।... मैं फिर से तुम्हारे साथ जंगलों में घूमूंगी तो फिर पहले जैसी हो जाऊँगी!''... मैं इतनी कुरूप हो गई हूँ क्या?'' पर माधवी की कुरूपता, ढलकती देह, अनाकर्षक रूप को देखकर गालव बदल जाता है जबकि माधवी ने गालव की गुरु दक्षिणा के लिए अपना संपूर्ण जीवन दे दिया। माधवी जब गालव को ले जाना चाहती है तो गालव कहता है ''मैं चाहता हूँ तुम अपने को स्वतंत्र समझों।'' गालव जैसे चरित्रों को नाटककार ने सशक्त रूप में उघाड़ा है।

गालव कहता है ''पर जो स्त्री मेरे गुरु के आश्रम में रह चुकी हो, उसे मैं अपनी पत्नी कैसे मान सकता हूँ?''

अनेक कष्टों को झेलती माधवी टूट जाती है जब ययाति द्वारा उसका स्वयंवर रचाया जाता है। गालव को लेकर उसे बहुत दुःख है। माधवी गालव से कहती है ''मेरे चारों ओर राक्षस और दानव घूम रहें हैं, कर्त्तव्यपरायण दानव... तीनों राजा मेरे बच्चों को साथ लेकर यहाँ पहुँच गए हैं जैसे मछली पकड़ने के लिए कांटे में छोटी मछली लगा दी जाती है, वे मेरे बच्चों को मेरे सामने लाकर मुझे प्रलोभन देंगे, सभी कर्त्तव्य के पक्के... सभी महामानव। तुमने मेरे यौवन की आहुति देकर अपनी गुरु दक्षिणा जुटायी है।'' भीष्म साहनी ने नारी की दयनीय स्थिति की प्रस्तुति करके उसे अंत में स्वाभिमानी रूप दिया है। नाटक के अंत में माधवी कहती है गालव से- ''तुम निश्चिन्त हो जाओ गालव, तुम सचमुच स्वतंत्र हो। मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बन सकती। शरीर की शिथिलता तो दूर हो सकती है... पर अब मैं दिल से तो युवती नहीं हूँ ना।''

गालव उसे पुनः चाहने लगता है परन्तु माधवी अस्वीकार कर देती है। जो माधवी के नए प्रभावशाली रूप को प्रकट करता है। ''यह छिछली भावुकता किस काम की? यौवन और रूप तो मिल जाएंगें पर इस अपने दिल का क्या करूँगी जो छलनी हो चुका है।'' सम्पूर्ण नाटक पितृसत्तात्मक व्यवस्था में नारी पर होने वाले शोषण का प्रखर चित्र प्रस्तुत करता है। वह दान के लिए नहीं बनी है, उसकी भी अपनी इच्छाएँ हैं, सपने हैं। वह केवल पुरुष का साधन नहीं है। वचनबद्धता, कर्त्तव्यपरायणता के पाठ पढ़ा-पढ़ा कर हमने उसका शोषण ही किया है। आगे आने वाले समय में उसकी तस्वीर बदलेगी ऐसा विश्वास और आस्था 'माधवी' नाटक से हमें मिलती है। भीष्म साहनी की यह सृजना बहुत समय तक मूल्यवान रहेगी।

सन्दर्भ-

1. माधवी, भीष्म साहनी - राजकमल प्रकाशन 2008